धुंध के उस पार देखने का जज्बा

निरंजन सहाय

जॉन होल्ट के नाम से हिन्दी के पाठक भलीभांति परिचित हैं। उनकी अनेक पुस्तकें अब हिन्दी पाठकों के लिए उपलब्ध हैं। शिक्षा विमर्श में जॉन होल्ट की पुस्तकों की समीक्षा प्रस्तुत की जाती रही है। इस बार उनकी पुस्तक 'द अन्डर अचिविंग स्कूल' का हिन्दी अनुवाद 'असफल स्कूल' की समीक्षा दी जा रही है। पुस्तक का प्रकाशन 'एकलव्य' भोपाल से हुआ है।

अमूमन तौर पर समृद्ध सामाजिक अनुभवों, सभ्यता-संस्कृति समीक्षा, उत्पीड़ितों के प्रति गहरी संवेदनशीलता, पर्यावरण के प्रति उत्कट सजगता, रूढ़िवादी पद्धति की जटिलताओं की सूक्ष्म समझ जैसे सरोकारों से अनभिज्ञता का आरोप तीसरी दुनिया के अनेक शिक्षाशास्त्रियों व वहां की शिक्षण पद्धतियों पर चस्पा किया जाता रहा है। पर दुनिया में विकास व मानवाधिकार के मानकों पर सर्वाधिक सफल होने का दावा करने वाले अमरीकी लोकतंत्र में शैक्षिक सरोकारों व संस्थाओं की आंतरिक पद्धतियों की हालत जिन जटिलताओं, नस्लवादी अमानवीयताओं और ठस रूढ़ियों का प्रतिबिंबन कर रही हैं, उनके प्रति हम प्रायः बेखबर ही रहे। जॉन होल्ट ने इस व्यवस्था को बेहद संवेदनशील, बेवाक और मुखर नजरिए से देखा। 'एकलव्य' ने उनकी कुछ उन चुनिंदा पुस्तकों को हिन्दी में प्रकाशित करने का सराहनीय प्रयास किया है, जिनमें अमरीकी स्कूली तंत्र के उत्पीडन, उत्साहहीन और अनुर्वर अध्यापन पद्धति, जेल के पर्याय बने क्लास-रूम नस्लवादी नजरिए के खौफनाक मंजरों का संवेदनशील वर्णन किया गया है। होल्ट की ये पुस्तकें केवल सीमाएं दिखाकर रुदन और विलाप के अंतहीन कुंए में हमें नहीं धकेलती, ये किताबें उन सपनों के लिए भी हमें उकसाती हैं जहां बच्चों के लिए वह संवेदनशील परिदृश्य उपलब्ध हो, जिसमें बच्चों की सक्रिय सहभागिता के आधार पर उनके विकास की अनंत संभावनाओं के दुर्गद्वार पर मुकम्मल दस्तक की प्रक्रिया शुरू हो। होल्ट ने जब ये पुस्तकें 'हाउ चिल्ड्रेन फेल', इस्केप फ्रॉम चाइल्डहुड', 'फ्रीडम एण्ड बियॉन्ड', 'नेवर टू लेट', 'द अंडर एचीविंग स्कूल' आदि लिखीं तब बाजारवाद और भूमंडलीकरण का आक्रामक, आकर्षक और आतंककारी मंजर नहीं था, पर पूंजीवादी तंत्र का वह चेहरा जरूर उपस्थित था, जो विकास प्रक्रियाओं और सामाजिक गतिविधियों को अपने हित में ढालने वाले स्कूली-तंत्र की वकालत करता था। अब, जबकि हम एक ऐसे वैश्विक परिदृश्य के बाशिन्दे हैं, जहां बाजार सबसे बड़ी ताकत होने का भ्रम रच रहा है और प्रतिरोध की जरूरत पहले से कहीं ज्यादा शिद्दत से महसूस की जा रही है, होल्ट की अवधारणाएं, उनकी बेबाकी और सपने देखने के लिए प्रेरित करती उनकी चिंताएं हमें कुछ ऐसे बेहद जरूरी और अनिवार्य सरोकारों से बावस्ता करती हैं, जिनसे रू ब रू होकर हम शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों से खुद को जोड़ सकते हैं।

लेखक परिचय :

हिन्दी साहित्य में पी.एच.डी., युवा आलोचक; शिक्षा, संस्कृति और साहित्य पर निरंतर लेखन, एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के सदस्य। विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित। संप्रति-पंडित उदय जैन महाविद्यालय, कानोड, उदयपुर में हिन्दी साहित्य के प्राध्यापक।

सम्पर्क :

इन्द्रप्रस्थ कॉलोनी, नीमच रोड, कानोड़, जिला-उदयपुर, राजस्थान
पिन 313604

एकलव्य द्वारा जॉन होल्ट रचित सद्यः प्रकाशित पुस्तक है - 'असफल स्कूल'। यह मूल पुस्तक 'The Under-Achieving School' का हिन्दी अनुवाद है। अनुवादक हैं - अरविन्द गुप्ता। इस अध्ययन यात्रा में हम पहले होल्ट की अवधारणाओं व सपनों के सहयात्री बनेंगे, उसके बाद अनुवाद की विशेषताओं व सीमाओं को भी जानने का प्रयास करेंगे।

पुस्तक के आरंभ में, प्रस्तावना के ठीक बाद जॉन होल्ट से एज्युकेशन एज के संपादकों द्वारा पूछे गए एक सवाल का जिक्र किया है - 'अमरीका के स्कूलों को यदि इस साल एक बेहतर कल की ओर एक बड़ा कदम उठाना हो, तो वह क्या होना चाहिए ?' होल्ट जवाब देते हैं, 'वह कदम होगा हरेक बच्चे को यह अधिकार देना कि वह अपनी शिक्षा को खुद नियोजित करे, खुद निर्देशित करे और खुद ही उसका मूल्यांकन करे। .... इस कदम के तहत यह भी किया जाएगा : हमारे स्कूलों को, जो इस समय बच्चों के लिए जेल हैं, मुक्त और स्वतंत्र शिक्षा में बदल देना। समुदाय का हर व्यक्ति, उसकी उम्र जो भी हो, इनका ज्यादा या कम, जितना चाहे उपयोग करे।' कहना न होगा किताब अपना पक्ष शुरू में ही स्पष्ट कर देती है। यानी यह पुस्तक-यात्रा उस प्रतिबद्धता से हमें रू ब रू कराती है जो विद्यार्थियों के पक्ष में है और एक नीरस तथा ऊबाऊ स्कूली तंत्र के प्रतिपक्ष में। पहला अध्याय केवल डेढ़ पन्ने का है - 'सच्ची सीख'। इस अध्याय में शिक्षा के निहितार्थों पर होल्ट की मान्यता है, सच्ची शिक्षा वह है, जिसमें स्वतंत्रता के अहसास और स्वाभिमान के साथ विकास की क्षमता हो। सीखने की यह प्रक्रिया जब विद्यार्थी द्वारा निर्धारित न हो तब तक उनका विकास संदिग्ध ही है। प्रायः शिक्षा और काम के बीच विरोध की स्थितियां बनती हैं, निश्चित रूप से उसमें शिक्षा-पद्धति की एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणा सक्रिय है। होल्ट इसे अपराध मानते हैं, वे कहते हैं, 'अगर कोई बच्चा या वयस्क समाज के लिए कोई उपयोगी काम करना चाहता है तो उसे उससे वंचित रखना इंसानियत के खिलाफ एक अपराध होगा। दरअसल, शिक्षा और काम के बीच यह विरोध जो हमने पैदा कर दिया है, एकदम मनमाना, अवास्तविक और हानिकारक है।' 'थोड़ी-सी सीख' में लेखक ने शिक्षा-सिद्धान्तकारों और सुधारकों, दोनों की उस दोषपूर्ण दृष्टि को परखने का प्रयास किया है, जिसमें सीखने वाले की नजर को नजरअंदाज किया जाता है। कक्षाएं खुद विद्यार्थियों को कैसी लगती हैं ? इस पर प्रायः निगाह नहीं जाती। विश्लेषक दो तरह की ही भूमिकाओं में नजर आ रहे हैं, बकौल होल्ट, 'पहली तो यह कि बारीकी से देखने से पहले ही वो बोलने लगते हैं और उनके सिद्धान्त खुद उनकी और दूसरों की आंखों के सामने पर्दा बन जाते हैं। उनकी नजर को धुंधला कर देते हैं। दूसरी, स्कूलों के साथ

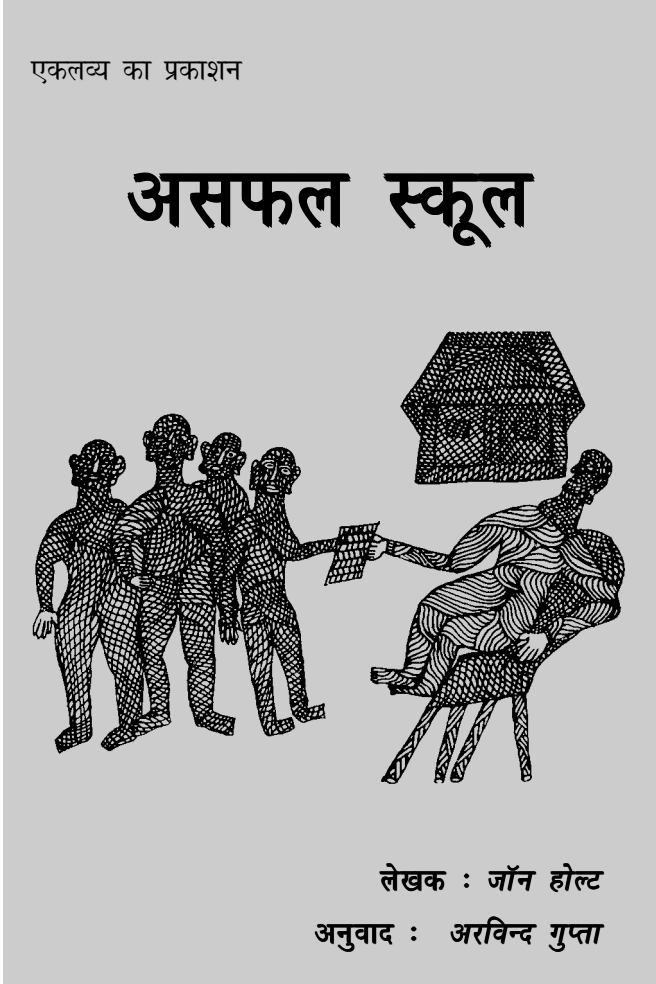

उनका सम्पर्क इतना विशिष्ट और कृत्रिम होता है कि वास्तव में उन्हें पता ही नहीं होता कि स्कूल कैसी चीज है।' पूर्वग्रह के साथ परोसे गए विश्लेषण और निष्कर्ष शिक्षा संसार के किसी चुनौतीपूर्ण क्षितिज तक पहुंचने में बाधा बनते हैं।

'स्कूल बच्चों के लिए खराब जगह है' नामक अध्याय में होल्ट स्कूली लोगों के साथ, योजनाकारों व अधिकारियों से हुए लंबे और लगातार संपर्कों का सार प्रस्तुत करते हैं। वे बताते हैं, फिलहाल स्कूलों में बहुत निष्ठुरता है। विद्यार्थियों पर होने वाली क्रूरताओं को होल्ट काफी संवेदनशीलता से परखते हैं। जहां विद्यार्थी प्रतिरोध की स्थिति में भी नहीं हैं, इससे त्रासद स्थिति भला और क्या हो सकती है ? ऐसे स्कूल-तंत्र से सर्वाधिक हानि है, होल्ट कहते हैं, 'सबसे अधिक हानि उन स्कूलों में होती है जहां बच्चे प्रतिरोध नहीं करते या नहीं कर सकते, क्योंकि उन्हें पता ही नहीं होता है कि उनके साथ क्या हो रहा है और उसे कौन कर रहा है। या फिर, यदि उन्हें इसका पता है तो वे सोचते हैं कि यह दुर्व्यवहार अच्छे, दयालु लोग उन्हीं

के भले के लिए कर रहे हैं।' इस अध्याय में होल्ट उन अनुगूंजों की भी चर्चा करते हैं, जिनका विश्लेषण उन्होंने अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'हाउ चिल्ड्रेन फेल' में किया था। स्कूलों की ट्रेनिंग इस अर्थ में बेहद भयावह है कि वह बच्चों की नैसर्गिक क्षमताओं को कुंद कर देती है। वे एक ऐसी ट्रेनिंग पाते हैं, जिसमें एक ऐसे समाज की संरचना तैयार होती है, जहां दूसरों पर ध्यान केवल उन्हें फंसाने के लिए ही दिया जाता है। वे एक खौफनाक मंजर का शिकार होते हैं, होल्ट का विचार गौरतलब है, 'यह ट्रेनिंग एक ऐसा समाज रचने के लिए है, जिसमें आप दूसरों को फंसाने के लिए उनकी ओर ध्यान देते हैं। नहीं तो आप लोगों की पूरी तरह उपेक्षा करते हैं। ... आप यह भी कह सकते हैं कि स्कूल बच्चों को अपना 'स्विच ऑफ' कर लेने की एक लम्बी ट्रेनिंग देता है।' विद्यार्थियों के लिए यदि स्कूल ऐसे 'ईंटों के बॉक्स' हैं, जहां असली दुनिया से काफी दूरी है, तो ऐसी शिक्षा का औचित्य संदिग्ध है। न्यूयार्क की एक संस्था 'टीचर्स एंड राईटर्स कोलैबोरिटिव' की गतिविधियों को लेखक एक बेहतर विकल्प के रूप में पाते हैं, जिसकी व्यापकता में पब्लिक स्कूलों से लेकर गरीब स्कूल भी शामिल हैं। स्कूलों की व्यवस्था में आमूल-चूल बदलाव के पक्षधर होल्ट हमसे सवाल पूछते हैं और हमारी नजरों के सामने के धुंधलके को इस तरह साफ करते हैं, 'क्या हम बच्चों को भीरू, आज्ञाकारी, डरपोक, कायर भेड़ों जैसा बनाना चाहते हैं या फिर मुक्त इंसानों जैसा ? अगर हमें भेड़ें चाहिए तो हमारे स्कूलों की वर्तमान हालत उसके लिए बिल्कुल उपयुक्त है। और अगर हमें मुक्त इंसान चाहिए तो हमें कुछ बड़े-बड़े परिवर्तन करने होंगे।' सत्ता की रणनीति के लिए शिक्षा प्राप्ति को होल्ट 'चूहा दौड़' कहते हैं। वे इस बात की जरूरत को पुरजोर तरीके से रेखांकित करते हैं कि 'स्कूलों और कॉलेजों को इस अवधारणा को जड़ से ही मिटाने की कोशिश करनी चाहिए कि शिक्षा किसी सत्ताधारी की कृपा दृष्टि पाने के लिए अन्य छात्रों के खिलाफ एक दौड़ है। उन्हें इस सच्चाई को सबके सामने रखना चाहिए जिसे येल विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष ग्रिसवोल्ड ने बड़ी स्पष्टता से कहा है, महत्त्वपूर्ण यह है कि 'पढ़ने वाले इंसान में खुद सीखने, यानी हरेक काम का आनन्द लेते हुए उसमें अर्थ और सच्चाई खोजने की इच्छा और क्षमता होनी चाहिए।' जाहिर है परीक्षा में प्रदर्शन को ही सफलता का एकमात्र आधार मानना या विद्यार्थी की सफलता का मानक मात्र परीक्षा होना तर्क संगत नहीं ।

पुस्तक में एक बेहद रोचक अध्याय है, 'शिक्षक बहुत ज्यादा बोलते हैं'। अध्यापन की यह एक बेहद गंभीर समस्या है कि कक्षा में काम या सीखने पर काफी कम बल होता है या लगभग नहीं ही होता है, जबकि नियंत्रण पर काफी बल दिया जाता है। जब शिक्षक बहुत ज्यादा बोलते हैं, तब छात्र-छात्राएं निष्क्रियता की अंतहीन राह पर चल देते हैं। होल्ट का आग्रह है विद्यार्थी को श्रोता के बजाए सहयात्री बनाना चाहिए जो जिरह और तर्क-वितर्क की प्रक्रिया को स्वाभाविक मानते हुए अपनी समझ की जांच करे और विस्तार दे। पाठ के अंत में लेखक यह कहना नहीं भूलते कि, 'आमतौर पर स्कूल और बेलगाम बोलने वाले शिक्षक ही बच्चों को निष्क्रिय शिष्यों में बदल देते हैं।' 'परीक्षण का आतंक' अध्याय एक बारगी हमें होल्ट को एक नकारवादी शिक्षाशास्त्री के रूप में पेश करता है, पर जैसे-जैसे हम अध्याय की अध्ययन यात्रा को थोड़ी सूक्ष्म दृष्टि से परखने की कोशिश करते हैं, होल्ट के सपने का रहस्य खुलता नजर आता है। परीक्षण की प्रचलित प्रणाली के प्रति जॉन होल्ट की गंभीर असहमतियां हैं। होल्ट का मानना है, 'परीक्षण से फायदा कम, नुकसान ज्यादा होता है। उससे सीखने की प्रक्रिया विकृत और भ्रष्ट हो जाती है, रुक जाती है।' होल्ट परीक्षण को दुरुस्त करने में यकीन नहीं करते, बल्कि उसे पूरी तरह हटाने का प्रस्ताव पेश करते हैं। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए होल्ट संगीत, सर्जरी जैसी अभ्यासपूर्ण गतिविधियों का उल्लेख करते हुए कहते हैं, 'किसी भी गम्भीर अभ्यास में सीखने वाला अपनी कुशलता और ज्ञान का परीक्षण करता है।' वे आगे यह भी कहते हैं, भय और लालच प्रेरित परीक्षाएं सच्ची शिक्षा नहीं हैं। प्रचलित परीक्षाएं जाल में फंसाने की युक्ति हैं। कई बार परीक्षक मनमाफिक उत्तर के लिए प्रश्नों का ऐसा वितान रचते हैं कि बच्चों के सीखने की स्वतंत्र प्रक्रिया बाधित होती है। वे परीक्षण की प्रक्रिया से असहमत होते हुए सच्ची शिक्षा की जिस अवधारणा को पेश करते हैं, उसमें ज्ञानार्जन की सच्ची खोज नजर आती है, बकौल होल्ट, 'सच्ची शिक्षा जो चीज हमसे चाहती है वह है विश्वास और हिम्मत। विश्वास इस धारणा में कि बच्चे इस दुनिया को समझने के लिए तत्पर हैं और इसके लिए वे कड़ी मेहनत करेंगे। और हिम्मत इस बात के लिए कि हम उन्हें यह काम अपने आप करने दें, हम उनके इस काम में बार-बार दखल न दें, बार-बार उसकी टोह लेने की कोशिश न करें, बार-बार उन्हें हांकें नहीं।' व्यवस्था और अव्यवस्था की रूढ़ियों से अलग होल्ट एक ऐसे जनतांत्रिक माहौल के पक्ष में हैं जहां बच्चों की आवाज को नजरअंदाज करने की परिचित आदतों से असहमति है। विद्यार्थियों की भावना व उनके विचारों को समझने, सुनने का अभ्यास प्रायः गुरुओं में नहीं होता। संप्रेषण या संवाद न हो पाने पर वे अपनी खीझ, किताबों या अध्ययन सामग्री को जमीन पर पटककर या कापियां फाड़कर निकालते हैं। लेखक का विचार है विद्यार्थियों के विचारों को आदर देना चाहिए, इससे संप्रेषण की बाधाएं दूर हो जाएंगी व सीखने का माहौल बनेगा। 'भविष्य के लिए शिक्षा' पुस्तक का सबसे बड़ा और बेहद संवेदनशील अध्याय है, जिसमें समाज की मौजूदा जटिलताओं, विसंगतियों, जिसमें नस्लभेद, पराधीनता की लंबी ट्रेनिंग, पारंपरिक

शिक्षा के असली मंतव्यों, अमरीकी नीतियों के खोखेलपन का मौजूं और तर्कसंगत विश्लेषण किया गया है। होल्ट की बेवाकी के लिहाज से अध्याय लाजवाब है, कुछ अभिव्यक्तियां देखी जा सकती हैं -

- हमारे सामने यह समस्या नहीं है कि स्कूल कैसे काम करें, बल्कि यह कि उनका काम क्या है, कि शिक्षा का हमारे समय की बड़ी समस्याओं और मुद्दों से क्या संबंध है।
- हमने अपनी अधिकांश दौलत को बल या छल के जरिए अश्वेत लोगों से छीना है, इस धन को अब वे वापस मांगने लगे हैं और हम इसे वापस देने को तैयार नहीं हैं। दूसरी ओर हम दुनिया के संसाधनों को साल-दर-साल अधिक तेजी से निगल रहे हैं। हमारे धनी होते जाने के कारण दूसरे लोग गरीब हो रहे हैं। अन्त में, और यह सबसे महत्त्वपूर्ण बात है, धनी, गोरे लोग नस्लवादी हैं। अधिकांश गोरे अलग-अलग मात्रा में अश्वेत लोगों से घृणा करते हैं, उनसे डरते हैं और उनका तिरस्कार करते हैं।
- युद्ध का कारण वे लोग हैं जो अपने जीवन में रोजमर्रा इकट्ठा हुई निराशा, जलन, भय, गुस्से, नफरत आदि के लिए अन्य लोगों और देशों को दोषी ठहराकर उन्हें बलि का बकरा बनाते हैं।
- परम्परागत शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य हमेशा बच्चों को ऐसे वयस्क बनाने का रहा है जो अपने नेताओं के कहने पर अन्य लोगों को अपना दुश्मन मानें, उनसे नफरत करें और उन्हें मारने की कोशिश करें।
- मनुष्यता को जीवित रखने के लिए हमें ऐसे लोगों को बनाना सीखना होगा जो अपने जीवन को संपूर्ण रूप में जीना चाहते हों, उसे सार्थकता और खुशहाली से भरना चाहते हों। यानी हम घर में और स्कूल में बच्चों को स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और आदर दें, जो चीजें अभी उनके पास नहीं हैं।
- हमारे पास तकनीकों और साधनों की कमी नहीं है, बल्कि संवेदना और हमदर्दी का अभाव है। और इन भावनाओं का स्कूल में विकास नहीं होता है।
- अमरीका में गोरे लोगों और नीग्रो लोगों के बीच के रिश्ते उस तरह के रहे हैं, जैसे एक धनी औपनिवेशिक देश और एक गरीब, अविकसित, शोषित उपनिवेश के बीच होते हैं। अन्तर केवल इतना है कि यहां पर दो अलग देश नहीं हैं। यहां श्वेत और नीग्रो लोग एक ही देश में रह रहे हैं।
- यदि हम एक ऐसे देश की कामना करते हैं, जहां लोग भेड़चाल और गुलामी की जमकर खिलाफत करें और खुद के और अन्य लोगों के नागरिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए लड़ें, तो हमें अपने बच्चों को स्कूलों में कुछ सच्ची स्वतंत्रता देनी चाहिए- चलने, घूमने-फिरने, बोलने की स्वतंत्रता, अपने समय को योजनाबद्ध तरीके से उपयोग करने की स्वतंत्रता, अपने काम को दिशा देने और उसके मूल्यांकन की स्वतंत्रता, समझदार इंसान समझे जाने की स्वतंत्रता।'

होल्ट ने यह निबंध 1968 में लिखा। होल्ट जिस शिक्षा की अवधारणा पेश करते हैं, उसमें अलगाव, चाहे वे नस्लभेद के रूप में हों, चाहे श्रेष्ठता दंभ पर आधारित पारंपरिक शिक्षा पद्धति के रूप में हो (भारतीय संदर्भ में संघ की स्कूल शाखाएं इस प्रसंग की बेहतर नजीर हैं) या फिर विद्यार्थियों के सपनों, सरोकारों, अभिव्यक्तियों को नेस्तनाबूद करने की प्रक्रिया के रूप में हों, इन तमाम धुंधों के खिलाफ सच्ची समर्थ रोशनी की तलाश की पक्षधरता है। शिक्षा के सरोकार कितने वृहत्तर हो सकते हैं, इसे बरास्ते 'असफल स्कूल' बखूबी समझा जा सकता है।

एकलव्य के लिए इस पुस्तक का अनुवाद अरविन्द गुप्ता ने किया है। अनुवाद की यह एक बड़ी विशेषता इस पुस्तक में उपस्थित है कि वह कृत्रिम और तकनीकी शब्दावलियों से लदी बोझिल नहीं है। अनुवादक संवादधर्मी भाषा के कायल हैं। वे अनुवाद क्रम में संस्कृत परंपरा के बजाए देशज परंपरा पर ज्यादा यकीन करते नजर आ रहे हैं। ऐसे अनुवाद आमतौर पर दुर्लभ होते हैं। पर कुछ सीमाओं को भी इस प्रसंग में देखना लाजमी है। होल्ट ने मूल पुस्तक में 'बेबी' शब्द का प्रयोग किया है, अनुवादक इसके लिए लड़का का प्रयोग करते हैं, यह जाने अनजाने पितृ सत्तात्मक परंपरा का निर्वाह है। वे विद्यार्थी, लड़के-लड़कियों या अन्य ऐसे पद का प्रयोग कर सकते थे, जो लड़के-लड़कियों दोनों को प्रतिबिंबित करे। उसी तरह एक स्थान पर 'कमतर' के लिए 'नीच' शब्द का प्रयोग है। भारतीय परंपरा में 'नीच' एक पारिभाषिक शब्द है, जिसका व्यवहार 'अवर्णों' के लिए होता था। उसी तरह एक स्थान पर 'लड़ाई की संभावना' पदबन्ध का प्रयोग है, यहां संभावना की जगह 'आशंका' होना चाहिए। एक स्थान पर 'परंतु फिर भी', दूसरे स्थान पर 'अनेकों', एक अन्य स्थान पर 'बावजूद भी' प्रयोग है। यह उम्मीद की जा सकती है कि अनुवादक इन प्रसंगों को भी ध्यान में रखेंगे। ◆